Dr•Manoj Kumar Singh
Assistant Professor
Dept of psychology
Maharaja College Ara

Date; 04/07/2025

Class: U.G Semester - V
(MJC-8)

Clinical Psychology.

Topic

नैदानिक मनोविज्ञान का कार्य क्षेत्र तथा कार्य

(Scope and Functions of Clinical Psychology)

नैदानिक मनोविज्ञान मनोविज्ञान की एक ऐसी प्रयुक्त शाखा (applied branch) है जिसका विकास काफी तेजी से हुआ है। आधुनिक समय में नैदानिक मनोविज्ञान एक प्रमुख पेशा (profession) के रूप में उभर कर लोगों के समाने आया है। फेयर्स (Phares, 1984) के अनुसार नैदानिक मनोविज्ञान के कार्य-क्षेत्र (scope) का सही-सही अंदाजा हमें तब मिलती है जब हम नैदानिक मनोवैज्ञानिकों द्वारा किए गए विभिन्न तरह के कार्यो की समीक्षा (review) करते हैं। इस सिलसिले में गारफिल्ड एवं कुर्ज (Garfield & Kurtz, 1976) तथा नौरकौस एवं प्रोचास्का (Norcross & Prochaska, 1982) द्वारा किए गए सर्वे (survey) की विशेष अहमियत बतलायी गयी है। गारफिल्ड एवं कुर्ज (Garfield & Kurtz, 1976) ने नैदानिक मनोवैज्ञानिकों के एक ऐसे समूह का चयन किया जो अमेरिकन मनोवैज्ञानिक संघ (American Psychological Association या APA) के विभाग 12 (Division 12) अर्थात् नैदानिक मनोविज्ञान के विभाग (Division of clinical psychology) के सदस्य थे और प्रत्येक को एक प्रश्नावली डाक द्वारा भेजा जिसमें उन्हें एक नैदानिक मनोवैज्ञानिक के प्रमुख कार्य-क्षेत्रों (scopes) का उल्लेख करना था। इस सर्वे में करीब 800 नैदानिक मनोवैज्ञानिकों ने उस प्रश्नवाली को भरकर लौटाया। एक इसी तरह का सर्वे नौरक्रौस तथा प्रोचास्का (Norcorss & Prochaska, 1982) द्वारा किया गया जिसमें करीब 50 नैदानिक मनोवैज्ञानिकों ने नैदानिक मनोविज्ञान के प्रमुख कार्य-क्षेत्रों का वर्णन एक प्रश्नावली में दिए गए प्रश्नों के उत्तर के रूप में किया। इन दोनों अध्ययनों से कुछ वैसे कार्यक्षेत्रों का स्पष्ट संकेत मिला जिसे अधिकतर नैदानिक मनोवैज्ञानिक उपयुक्त समझते हैं। ऐसे कार्यक्षेत्र फेयर्स (Phares, 1984) के अनुसार निम्नांकित छह है-

(1) मनोचिकित्सा (Psychotherapy)

(2) निदान एवं मूल्यांकन (Diagnosis and Assessment)

(3) शिक्षण (Teaching)

(4) शोथ (Research)

(5) परामर्श (Consultation)

(6) प्रशासन एवं प्रबंधन (Administration and Management)

इन सबों का वर्णन निम्नांकित है

(1) मनश्चिकित्सा (Psychotherapy) मनश्चिकित्सा नैदानिक मनोविज्ञान का एक प्रमुख कार्य-करीब 88.3% नैदानिक मनोवैज्ञानिक इसी कार्य में गहन रूप से लगे हुए है। मनश्मिकित्सा में नैदानिक मनोवैज्ञानिक विधियों से व्यक्ति के मानसिक रोगों का निदान एवं उपचार करते हैं। मनश्चिकित्सा के कई विमाएँ (dimensions) गा प्रकार है तथा उसके कई उद्देश्य है। मनश्चिकित्सा के विभिन्न प्रकारों में मनोविश्लेषणात्मक चिकित्सा (psychoanalytic therapy), क्लायंट केन्द्रित निकित्सा (client-centered therapy), व्यवहार चिकित्सा (behaviour therapy). रैसनल इमोटिव चिकित्सा (rational-emotive therapy) आदि प्रधान है। हेरिक (Herink, 1980) के अनुर चिकित्सा (therapy) के करीब 250 विभिन्न प्रकार हैं जिनका उपयोग नैदानिक मनोविज्ञानी किसी-न-किसी रूप में करते हैं। मनश्चिकित्सा एक समय में एक ही व्यक्ति पर किया जा सकता है या व्यक्तियों के एक समूह में भी इसे किया जा सकता है। कुछ मनश्चिकित्सा मात्र दो-तीन महीने तक ही चलता है तो कुछ मनश्चिकित्सा साल-साल भर तक चलता रहता है। क्लायंट को अस्पताल में भर्ती करके या फिर उन्हें बिना भर्ती किये हुए उन्हें अपने घर पर रहते हुए ही उपचार किया जाता है। कुछ मनश्चिकित्सा का स्वरूप सुधारक (remedial) होता है क्योंकि इसका उद्देश्य व्यक्ति की वर्तमान समस्या का समाधान करना होता है जबकि कुछ मनोचिकित्सा का स्वरूप निरोधक (preventive) होता है क्योंकि इसका उद्देश्य व्यक्ति में संवेगात्मक वा अन्य इसी तरह की कठिनाइयों को उत्पन्न होने से रोकना होता है। नौरकासे तथा उनके सहयोगियों (Norcross et al., 1997) द्वारा किये गए अध्ययनों यह स्पष्ट हुआ कि नैदानिक मनोवैज्ञानिकों के कार्य अवस्था (work setting) के अनुसार मनोचिकित्सा की प्रक्रिया में मनोवैज्ञानिकों द्वारा व्यतीत किया गया समय भिन्न-भिन्न होते हैं। जैसे, विश्वविद्यालय प्रोफेसरों द्वारा इस कार्य में करीब 10% का समय दिया जाता है; अस्पताल परिसर में नैदानिक मनोवैज्ञानिकों द्वारा करीब 40% समय दिया जाता है तथा निजी व्यवसायी (private practitioner) द्वारा करीब 60% समय दिया जाता है। मनश्चिकित्सा का प्रकार तथा उद्देश्य बाहे जो भी हो, नैदानिक मनोवैज्ञानिकों का यह एक प्रमुख कार्य-क्षेत्र है और आम जनता नैदानिक मनोवैज्ञानिक को मूलतः मात्र इसी कार्य के विशेषज्ञ के रूप में ही समझती है।

(2) निदान एवं मूल्यांकन **(Diagnosis and Assessment**) नैदानिक मनोविज्ञान का दूसरा प्रमुख कार्य क्षेत्र निदान (diagnosis) एवं मूल्यांकन (assessment) है। इसमें करीब 73.8% नैदानिक मनोवैज्ञानिक कार्यरत है। निदान से तात्पर्य व्यक्ति के निरीक्षित (observed) गुणों के आधार पर उसकी असामान्यता (abnormality) के लक्षणों एवं वर्गीकरण (classification) की पहचान करने से होता है। विलियमसन (Williamson, 1950) के अनुसार, निदान व्यक्ति की समस्याओं, उसके कारणों एवं अन्य महत्वपूर्ण गुणों का एक संक्षिप्त सारांश होता है जिसमें समायोजन तथा कुसमायोजन करने की अन्तःशक्ति का आशय भी होता है। मूल्यांकन (assessment) एक ऐसा तरीका है जिसके सहारे व्यक्ति के बारे में विभिन्न तरह की सूचनाओं को एकत्रित किया जाता है ताकि समस्या का समाधान किया जा सके। मूल्यांकन की प्रक्रिया को नैदानिक मनोवैज्ञानिकों द्वारा प्रेक्षण (observation), परीक्षण (testing) या साक्षात्कार (interviewing) किसी के रूप में भी सम्पन्न किया जाता है। अधिकतर नैदानिक मनोवैज्ञानिकों के लिए मूल्यांकन बहुत लम्बे समय तक एक महत्त्वपूर्ण कार्य रहा है। मूल्यांकन में विशेषकर परीक्षण कार्य (testing) को नैदानिक मनोवैज्ञानिकों द्वारा अधिक महत्त्व दिया गया है।

(3) शिक्षण (Teaching)- शिक्षण कार्य भी नैदानिक मनोवैज्ञानिकों का एक प्रमुख कार्य-क्षेत्र है। 61.7% नैदानिक मनोवैज्ञानिक इस कार्य को सफलतापूर्वक कर रहे हैं। नैदानिक मनोवैज्ञानिक अपनी नियुक्ति (appointment) के स्वरूप के अनुसार अंशकालीन (part-time) या पूर्णकालीन (full-time) शिक्षण करते हैं। वे प्रायः उच्यतर असामान्य मनश्चिकित्सा, परीक्षण-कार्य (testing), नैदानिक साक्षात्कार (clinical interview), मनोचिकित्सा (psycho-therapy), व्यक्तितत्व सिद्धान्त (personality theory), प्रयोगात्मक नैदानिक मनोविज्ञान

(experimental clinical psychology) आदि जैसे विषयों का शिक्षण करते है। नैदानिक मनोवैज्ञानिकों द्वारा दिया जाने वाला शिक्षण अधिकतर भाषण-विधि (lecture method) पर आधारित होता है परन्तु इन लोगों द्वारा एक-एक करके पर्यवेक्षणात्मक आधार (supervisory basis) पर भी शिक्षण कार्य किए जाते हैं। कुछ केसेज में नैदानिक मनोवैज्ञानिक समुदाय (community) में आकर विषयों पर पुलिस पदाधिकारियों, सामाजिक कार्य-कर्ताओं, प्रोवेसन पदाधिकारियों के लिए कार्यशाला (workshop) भी चलाते है। इतना ही नहीं, नैदानिक मनोवैज्ञानिक कुछ विशिष्ट विषयों पर छात्रों के लिए सेमिनार भी आयोजित करते है और इसके माध्यम से मूल्यांकन (assessment) तथा विकिलाकीद कौशली (therapeutic skills) के बारे में उत्तम जानकारी दी जाती है। वैसे नैदानिक मनोविज्ञान जो शैक्षिक पद पर नहीं होते हैं, वे भी प्रायः शिक्षण कार्य करते देखे गए है। प्रायः ऐसे मनोवैज्ञानिको को पेशेवरों (professionals) तथा परापेशेवरों (paraprofessionals) की मदद करने के लिए कार्य-पर-प्रशिक्षण (on-the-job) दिया जाता है।

<u>(4) शोध (Research</u>) नैदानिक मनोविज्ञान का एक प्रमुख प्रमुख कार्यक्षेत्र शोध (research) भी है। अध्ययनों के आधार पर यह पता बला है कि करीब 52.85% नैदानिक मनोवैज्ञानिकों द्वारा शोध कार्य किये जाते है। अन्य मानसिक स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं से भिन्न नैदानिक मनोवैज्ञानिकों को शोध करने का भी प्रशिक्षण किया जाता है। इन शोधों का परिणाम यह होता है कि नैदानिक मनोवैज्ञानिक नया ज्ञान उत्पन्न करने तथा उसे आत्मसात करने में सक्षम हो पाते हैं। नैदानिक मनोवैज्ञानिक भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में शोधतार्य करते है जिनमें प्रमुख है-व्यक्तिल का सिद्धान्त, मूल्यांकन प्रविधियों (assessment devices) का विकास एवं वैधीकरण (validation), निकित्सा प्रविधियों का मूल्यांकन (evaluation of therapy techniques)। इसके अलावा जिन क्षेत्रों में इनके शोध की सक्रियता अधिक है, वे हैं- किशोर दैहिक आक्रमता (adolescent physical aggression), द्विधुवीग रोगियों का कार्य समायोजन (work adjustment of bipolar patients), बाल अपराध तथा आक्रमक व्यवहार का रोकथाम (prevention of delinquent and violent behaviour) आदि। इनके शोधों को अन्य जरनल के अलावा 'जरनल ऑफ कन्सल्टिंग एण्ड क्लिनिकल साइकोलॉजी (Journal of Consulting and Clinical

Psychology), क्लिनिकल साइकोलॉजी (Clinical Psychology) साइकोलोजिकल एसेसमेन्ट (Psychological Assessment) तथा जरनल ऑफ एवनॉरगल साइकोलॉजी (Journal of Abnormal Psychology) में मुख्य रूप से प्रकाशन किया जाता है। भारत में विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं संस्थानों में नैदानिक मनोविज्ञान के क्षेत्र में वैज्ञानिक शोध को पर्याप्त बढ़ावा दिया जा रहा है ताकि मनोविज्ञान की इस शाखा में नवीनतम प्रविधि एवं सिद्धान्त उभर कर आ सके और अन्ततोगत्वा, व्यक्ति की सांवेगिक समस्याओं को समझने एवं उनका उपचार करने में नैदानिक मनोवैज्ञानिकों को काफी मदद मिल पाए। पटना विश्वविद्यालय का मनोवैज्ञानिक शोध एवं सेवा संस्थान (Institute of Psychological Research & Service) भी इस सिलसिले में महत्वपूर्ण एवं प्रशशंसनीय भूमिका निभा रहा है। इस तरह से कहा जा सकता है कि नैदानिक मनोविज्ञान के सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक दो पहलू है जो एकन दूसरे के पूरक है।

<u>(5) परामर्श (Consultation</u>) नैदानिक मनोवैज्ञानिकों का एक प्रमुख प्रमुख कार्यक्षेत्र परामर्श। मर्श (consultation) भी है। करीब 67.4% नैदानिक मनोवैज्ञानिक इस कार्य को विशेष महत्ता देते हैं। परामर्श का कार्य बहुत हद तक शिक्षण (seaching) के कार्य से संबंधित है। परामर्श, एक ऐसी प्रविधि है. जिसने नैदानिक मनोवैज्ञानिक अपने विशेष ज्ञान एवं योग्यता के आधार पर दूसरे व्यक्ति को कुछ विशेष तरह की सूचना देकर उसकी समस्याओं को दूर करते हैं। परामर्श के कई प्रकार है जिनमें नैदानिक मनोवैज्ञानिकों को सक्रिय होना पड़ता है। औद्योगिक या व्यावसायिक संस्था (f) को एवं अपने सहकर्मियों (colleagues) तथा अन्य एजेन्सियों को वे परामर्श देते हैं। जैसे-किसी औद्योगिक या व्यावसायिक संस्था में नैदानिक परामर्शदाता (clinical consultants) को संस्था के कार्यपालकों (executives) को प्रेरित करने के उपायों पर राय देने को कहा जा सकता है; औषधि-व्यसनी की समस्याओं को दूर करने के खमाल से उन्हें कुछ परामर्श देने को कहा जा सकता है या किसी संगठन (organisation) की प्रभावशीलता (effectiveness) को बढ़ाने के लिए परामर्श देने को कहा जा सकता है। परामर्श का स्वरूप कभी तो सुधारक (remedial) होता है और कभी निरोधक (preventive) होता है। कुछ पैदानिक

परामर्शदाता (clinical consultants) की सेवा को अंशकालीन आधार (part-time basis) तथा कुछ की सेवा को पूर्णकालीन आधार पर कभी-कभी उपयुक्त धन खर्च करके प्राप्त किया जाता है। स्पष्ट है कि परामर्श कर चाहे जो भी स्वरूप क्यों न हो तथाहो, यह नैदानिक मनोवैज्ञानिकों का एक प्रमुख कार्य-क्षेत्र है। इस पर फेयर्स' (Phares, 1983) ने बहुत ही सटीक टिप्पणी करते हुए कहा है, "परामर्श चाहे जिस परिस्थिति में दी गयी हो या चाहे जो भी इसका विशेष उद्देश्य हो, आज यह बहुत नैदानिक मनोवैज्ञानिकों के लिए एक सार्थक कार्य बन गया है।"

(6) प्रशासन एवं प्रबंधन **(Administration and Management**) नैदानिक मनोविज्ञानी प्रशासनिक एवं प्रबंधन से संबंधित कार्य भी करते हैं। इस कार्य में दिन प्रतिदिन के नैत्य कार्य (routine work) के अलावा कुछ महत्त्वपूर्ण प्रशासनिक कार्य जिसमें फाइल देखना तथा उचित निर्देश देना आदि भी सम्मिलित होता है। नैदानिक मनोवैज्ञानिकों से प्रशासनिक कार्य इसलिए करने के लिए कहा जाता है क्योंकि उनमें संवेदनशीलता, अन्तर्वैयक्तिक कौशल तथा शोध सुविज्ञता (research expertise) आदि अधिक होते हैं। प्रशासनिक पद (administrative post) जिस पर रहकर नैदानिक मनोविज्ञानी प्रायः प्रशासनिक एवं प्रबंधन संबंधी कार्य किया करते हैं, इस प्रकार हैं- विश्वविद्यालीय मनोविज्ञान विभाग का अध्यक्ष (Head), प्रशिक्षण कार्यक्रम का निदेशक (Director), छात्र परामर्श केन्द्र (Student counselling.centre) का निदेशक, स्कूल तंत्र का अधीक्षक (Superintendent), किसी अस्पताल या उपचार केन्द्र का मुख्य मनोवैज्ञानिक, सामुदायिक मानसिक स्वास्थ्य (Community mental health) का निदेशक आदि। नॉरक्रॉस तथा उनके सहयोगियों (Norcross et al., 1989) ने अपने अध्ययन के आधार पर यह बतलाया है कि प्रशासनिक एवं प्रबंधन कार्य में नैदानिक मनोविज्ञानी अपने समय का लगभग 16% प्रतिशत समय व्यतीत करते हैं। इन लोगों के अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ है कि नैदानिक मनोविज्ञानिकों में कुछ इस ढंग का कौशल (skills) एवं विशेषताएँ (characteristics) होती हैं जो उन्हें प्रशासनिक कार्य के लिए योग्य बनाता हे। ऐसा देखा गया है कि शोध में प्रशिक्षण के माध्यम से नैदानिक मनोविज्ञानी गहन संगठनात्मक कौशल (strong organizational skills) विकसित कर लेते हैं जिनसे उन्हें प्रशासनिक पद की जवाबदेही निभाने में सुगमता होती है। अपने नैदानिक प्रशिक्षण (clinical training) के दौरान नैदानिक मनोवैज्ञानिक गहन अन्तर्वैयक्तिक कौशल (strong interpersonal skills) विकसित कर लेते हैं जो भी उन्हें प्रशासनिक पद की जवाबदेही निभाने में मदद करता है।

<u>स्पष्ट हुआ कि नैदानिक मनोविज्ञान का कार्यक्षेत्र काफी विस्तृत है। शायद यही कारण है कि नैदानिक मनोवैज्ञानिकों को मानसिक रोगों की चिकित्सा के अलावा भी तरह-तरह का कार्य करना पड़ता है।</u>